कृषि किरण अंक-7, जून 2019: पृष्ठ:17-18
http://saaer.org.in

गर्मियों के मौसम में पशुओ को तापघात (हीट स्ट्रोक) से बचाये

राजेश नेहरा
पशु पोषण विभाग
पशु चिकित्सा एवम पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

मई-जून के महीनों में हमारे यहाँ वातावरण का तापमान अत्यधिक होता है इसका सीधा असर पशुओं के उत्पादन पर पड़ता है। सामान्यता गाय-भैंसों का शारीरिक तापमान 38.8 ($+0.5^0$) सेंटीग्रेड (101.5 से 102.5° फोरेनहाईट) होता है एवं समतापी होने के कारण इनको अपने शरीर का तापमान बढते वातावरण के तापमान में भी सामान्य बनाये रखने हेतु अनुकूलतम ऊष्मा क्षय करना जरुरी है। ये ऊष्मा क्षय वातावरण के तापमान, हवा में नमी तथा हवा कि गति पर निर्भर करती है। गर्मी में यदि पशु अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाये रखने में विफल रहता है तो इसे तापघात (हिटस्ट्रोक) कहते हैं। ऐसी स्तिथि में पशु का तापमान बढ जाता है तथा दुग्ध उत्पादन असामान्य रूप से कम हो जाता है तथा पशु बीमार हो जाता है। अधिक दूध उत्पादन करने वाले पशु इससे अधिक प्रभावित होते हैं क्योंकि अधिक दूध देने वाले पशुओं में ऊष्मा का उत्पादन भी अधिक होता है।

तापघात के लक्षण:

1. तापघात से प्रभावित पशु सुस्त रहते हैं।
2. पशु अपना सिर नीचा रखते हैं तथा मुहं खोलकर साँस लेते हैं।
3. मुहं से लगातार लार गिरती रहती है एवं लार गिरने से खनिज लवणों का क्षय होता है |
4. पशु की श्वास गति एवं शरीर का तापमान बढ़ जाता है।
5. पशु का दूध उत्पादन अचानक गिरने लगता है।
6. पेशाब की मात्रा कम हो जाती है तथा नाक व नथुने सूख जाते हैं।
7. अत्यधिक तापमान से मस्तिष्क पर असर पड़ता है एवं पशु की मौत भी हो जाती है।

<u>बचाव के उपाय-</u>

आहार प्रबंधन-

1. पशुओं को चारा-दाना रात्रि में या देर शाम को 7-8 बजे के आस-पास एवं सुबह जल्दी 5-6 बजे देवें क्योंकि चारा खाने के बाद पशु के शरीर में ऊष्मा का उत्पादन होता है। अतः दिन में और

विशेषकर दोपहर में चारा-दाना कतई नहीं देवें।

2. पशुओं को अधिक से अधिक हरा चारा देवें इससे शरीर को आवश्यक खनिज तत्व एवं पानी की पूर्ति होती रहेगी एवं हरा चारा पचाने में भी आसान रहता है।
3. पशुओं के आहार में सूखे चारे की मात्रा कम रखनी चहिये क्योंकि इनके पाचन से जो वाष्पशील वसा अम्ल बनते हैं उनसे उनसे अधिक ऊष्मा उत्पादन होता है। अतः आहार में दाने की मात्रा अधिक रखनी चाहिए।
4. पशु आहार में 40-50 ग्राम नमक एवं 40-50 ग्राम खनिज लवण व विटामिन अवश्य देवें।
5. पीने का पानी हमेशा शुद्ध, शीतल एवं हमेशा उपलब्ध होना चाहिए। पीने के पानी को गर्म स्थान पर नहीं रखे। दिन में 3-4 बार पानी पिलावें।

आवास प्रबंधन-

पशुओं का बाड़ा खुला, हवादार होना आवश्यक है ताकि हवा कि गति बनी रहे | ताप घात का सबसे अधिक असर आर्द्रता अधिक होने पर होता है अतः पशु शाला का ऊपर की छत के पास का भाग आवश्यक रूप से खुला होना चाहिए |

पशुशाला में टाट बोरियां आदि भिगोकर लगानी चाहिए एवं पंखो व पानी के फवारों का उपयोग भी तापमान नियंत्रण में किया जा सकता है।

कूलर का उपयोग उसी स्तिथि में करें जब हवा आरपार आ जा सकती हो।

पशुशाला की छत पर बचा हुआ चारा, घास फूस आदि डाल कर ठण्डी रखनी चाहिए।

पशुओं को सुबह-शाम नहलाना चाहिए एवं उनके सिर पर पानी अवश्य डालना चाहिए। दिन के समय ठंडे पानी की पट्टी सिर पर रखी जा सकती है।

भैंसों में तापघात की ज्यादा सम्भावना रहती है। क्योंकि उनके शारीर का रंग काला एवं शारीर पर बाल भी कम होतें हैं अतः उनको दिन में दो बार अवश्य नहलाना चाहिए। अगर संभव हो तो दिन के समय भैंसों को तालाब या जोहड़ में छोड़ना चाहिए।